



Ministry of Education
Government of India



वर्तमानपरिप्रेक्ष में सर्वोत्तमुखी समाधान के संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन और जैन दर्शन का तुलनात्मक अध्ययन

प्रशिक्षार्थी : नेन्सी सोजित्रा

(आत्मिया यूनिवरसिटि - राजकोट)

परामर्शदाता : विशाल छाया जी

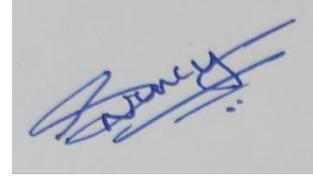
(डिप्लोमा मिक्चनिकल डिपार्टमेन्ट एवं उनिवर्शल ह्यूमन वेल्यू , आत्मिया यूनिवरसिटि - राजकोट)

प्रकाशन तिथि : 14 अगस्त 2022

यहकार्य IKS इंटरनशिप कार्यक्रम के तहत किया गया है ।

इंटरनद्वारा मौलिकता प्रमाणपत्र

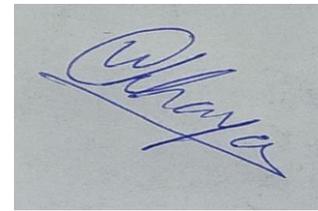
मैं घोषणा करती हूँ कि यह रिपोर्ट मेरे अपने शब्दों में मेरे विचारों को प्रस्तुत करती है और जहां दूसरों के विचारों या शब्दों को शामिल किया गया है, वहां मैंने मूल स्रोतों को पर्याप्त रूप से दर्शाया है और उनका संदर्भ दिया है। मैं घोषणा करती हूँ कि मैंने इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करने में उपयोग किए गए सभी स्रोतों को ठीक से और सटीक रूप से स्वीकार किया है। मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मैंने अकादमिक ईमानदारी और सत्यनिष्ठा के सभी सिद्धांतों का पालन किया है और मेरे प्रस्तुतीकरण में किसी भी विचार / डेटा / तथ्य / स्रोत को गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं किया गया है अथवा गढ़ा या मिथ्या रूप में नहीं दिया गया है। मैं समझती हूँ कि उपरोक्त का कोई भी उल्लंघन पाए जाने पर आईकेएस प्रभाग द्वारा अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है और उन स्रोतों द्वारा दंडात्मक कार्रवाई भी हो सकती है जिनका इस प्रकार उचित रूप से उल्लेख नहीं किया गया है या जिनसे आवश्यकता होने पर उचित अनुमति नहीं ली गई है।



इंटरन के हस्ताक्षर

मेंटरद्वारा मौलिकता प्रमाणपत्र :

मैं एतद्वारा प्रमाणित करता हूँ कि उपरोक्त रिपोर्ट सत्य है और यह कार्य मेरे मार्गदर्शन में किया गया था।



मेंटर के हस्ताक्षर

विषयसूची

Sr no.	Topic name	Page no.
1.	सार{ abstract }	4
2.	कार्यकारी सरांश { exclusive summary }	5
3.	परिचय	6
4.	पृष्ठभूमि तथा / अथवा ओचित्य	6
5.	परियोजना का विवरण	7
6.	पध्दति तथा / अथवा प्रक्रियाए	18
7.	परिणाम	18
8.	विचार-विमर्श	19
9.	निष्कर्ष और / या सिफरिशे	19
10.	स्वीकृतिया	20
11.	सन्दर्भ	20
12.	परिशिष्ट	20

सार

मध्यस्थ दर्शन एक अस्तित्व आधारित मानव केन्द्रित चिंतन है | यह दर्शन मानव जीवन के सभी आयामों की जांच और स्पष्टता प्रदान करता है | इसमें उन असंख्य समस्याओं का समाधान है जिनका हम सामना करते हैं, दुनिया जिन समस्याओं का सामना करती है | मध्यस्थ दर्शन में यह भी बताया गया है " अस्तित्व सहस्तित्व के रूप में है | "

जैन दर्शन में द्रव्य, कर्म, तत्व, अहिंसा (अहिंसा को जैन दर्शन में सर्वोच्च स्थान दिया गया है |), ब्रह्मांड विज्ञान, विजय, मोक्ष, अपरिग्रह, निर्जला जैसे कई मुख्य बिन्दुओं का संक्षिप्त में विवरण किया गया है | इस दर्शन में वर्तमान के उदाहरण के साथ हर एक बिन्दुओं को बताया गया है एवं वर्तमान समय की समस्याओं का निवारण का भी प्रयास किया गया है |

Abstract

Madhyasthdarshan is an existentially human centered thought. This philosophy provides inquiry and clarity of all dimensions problems that we face, the problems that the world face. It is also told in the MadhyasthDarshan that "existence in the form of coexistence ".

In jain philosophy matter, action, element, non-violence (non-violence is given the highest place in jain philosophy, like science, victory, moksha, aparigraha, nirjala) many main points have been described in brief.

कार्यकारी सारंश

इस रिपोर्ट में मेने शुरुआत में जैन दर्शन का परिचय दिया है एवं उसके महत्वपूर्ण बिन्दुओं का वर्णन भी किया है | फिर उस बिन्दुओं को आज से समय के साथ तुलना की है और आज के समय में उसकी परिभाषा को दर्शाने का प्रयास किया है |

उदाहरण के तौर पर देखे तो जैन दर्शन में किसी वस्तु या परमाणु को पुद्गल कहा है | मनुष्य इस पुद्गल को प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न होती है और यह इच्छा फिर लालच में परिवर्तित होती है | और इस लालच के चलते इंसान उस पुद्गल को पाने के लिए उसको प्राप्त करने के लिए कार्य करता है | वह उस प्रकार अन्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए उसके प्रति कार्य करता है और कर्मबंधन में फसता जाता है | इस कर्मबंधन में से बहार निकलने का हल भी जैन दर्शन में दर्शाया गया है | उसका हल यही है की मनुष्य को अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना चाहिए न की उसका गुलाम बने रहना चाहिए | इन्द्रियों पर काबू प्राप्त करने वाला इन्सान कर्मबंधन से मुक्त हो जाता है उसे जैन दर्शन में मुक्ति या तो मोक्ष बताया गया है | इस प्रकार जैन दर्शन में महत्व बिन्दुओं जैसे की मोक्ष प्राप्ति, सही भाषा में विजय प्राप्ति, कर्मबंधन से मुक्ति, इच्छाओं को नस्ट करना, हिंसा को बढ़ने से रोकना, आत्मा को प्रफुलित रखना आदि सब बताया गया है | जो आज के इस तनाव भरे जीवन में सिखना अति अवश्यक है |

इस रिपोर्ट में आगे मेने मध्यस्थ दर्शन का परिचय एवं उसमें बताये गए बिन्दुओं का वर्णन किया है | जैसे की इस रिपोर्ट में मेने मध्यस्थ दर्शन में बताये गए सहस्तित्ववाद, अखंड समाज रचना को दर्शाया है | एवं वर्तमान समय में इसकी परिभाषा को भी बताया है |

उदहारण के रूप में ; मध्यस्थ दर्शन में व्यापक (खाली जगह) और इकाई आती है । इन दोनों का एक साथ होने को सहअस्तित्व कहा गया है । और चार अवस्था की बात की गई है , जो है पदार्थवास्था , प्रणावस्था , जीवावस्था और ज्ञानावस्था जिन में जमीन, पानी, पेड़, पौधे, पशु, पक्षी और मानव है । हम पेड़, पौधे, पशु एवं पक्षी में अलग-अलग जाती देख सकते हैं परंतु मानव एक ही जाती है । पर आज के समय में मानव ने मानव में जाती बनानी शुरू कर दी है जो रंग, आकर, धन, धर्म, आदि के आधार पर है ।

यहाँ और एक खामी भी दिखाई पड़ती है कि जो चार अवस्थाएँ हैं उनमें जो मानव है वो अपना पोषण करने हेतु बाकि की तिन अवस्था का उपयोग करते हैं । परंतु उन तिन अवस्था को वापिस देने में पीछे हट जाते हैं उनके कारन असंतुलन पैदा होता है । जो एक बड़ी समस्या है ।

मध्यस्थ दर्शन मानव को आधार मानके चलता है । मानव को जन्म से लेकर कई संबंध होते हैं और कई संबंध बनाते हैं । पिता-पुत्र , माता – पुत्र , भाई-बहन , गुरु-शिष्य , मित्र ऐसे कई संबंध जो विश्वास और स्नेह से बंधे होते हैं । उन संबंध को सही समाज के साथकेसे निरंतर बनाये रखना है वो: मध्यस्थ दर्शन में बताया गया है ।

इन दोनों दर्शनों के परिचय के बाद मेने इस रिपोर्ट में दोनों दर्शनों का तुलनात्मक परिचय भी देने का प्रयास किया है और वर्तमान समस्याओं को दर्शाया है , इन वर्तमान समस्याओं का दोनों दर्शन की मदद से कैसे समाधान लाने का प्रयत्न किया जा सकता है वोह भी दर्शाया है ।

Exclusive summary

In this report, I have introduced Jain philosophy in the beginning and have also described its important points. Then have compared those points with the time from today and have tried to show its definition in today's time. For example, in Jain philosophy, an object or an atom is called a pudgal. The desire of man to get this pudgal arises and this desire is then converted into greed. And because of this greed, a person works to get that pudgal to get it. In order to get another thing like that, he works towards it and gets entangled in the bondage of Karma. The solution to get out of this karma bond is also shown in Jain philosophy. Its solution is that man should conquer his senses and not remain his slave. A person who gets control over the senses becomes free from the bondage of karma, he has been described as liberation or salvation in Jain philosophy. Thus, in Jain philosophy, important points such as attainment of salvation, victory in the right language, freedom from karma, destroying desires, preventing violence from increasing, keeping the soul swell etc. have all been told. Which is very important to learn in today's stressful life, In this report, I have described the introduction of mediator philosophy and the points mentioned in it. As in this report, I have shown the coexistence, monolithic society as described in the mediation philosophy. And in the present time its definition has also been told.

For example; In mediation philosophy, there comes the broad (empty space) and the unit. The existence of these two together is called coexistence. And four states have been talked about, which is the state of matter, the stage of life, the state of life and the stage of knowledge, in which there are land, water, trees, plants, animals, birds

and humans. We can see different species in trees, plants, animals and birds, but humans are of only one species. But in today's time man has started making caste in human which is based on color, size, wealth, religion, etc. Here another drawback is also visible that in the four stages, the human beings use the remaining three stages to feed themselves. But they lag behind in giving back those three states, due to them imbalance arises. Which is a big problem, Meditative philosophy follows human beings as the basis. Human beings have many relationships from birth and make many relationships. Father-son, mother-son, brother-sister, guru-disciple, friend are many such relations which are bound by trust and affection. How to maintain that relationship with the right society is said in the mediation philosophy. After the introduction of these two philosophies, I have also tried to give a comparative introduction of both the philosophies in this report and have shown the current problems, with the help of both these philosophies, an attempt can be made to bring solutions is.

परिचय

दर्शन का मतलब प्रत्यक्ष द्रष्टि | जो सत्य और शुद्ध बुद्धि , तर्क की प्रत्यक्ष द्रष्टि पर निर्भर करता है | भारतीय दर्शन का लक्ष्य दुखो के मूल कारण अज्ञान से मानव को मुक्ति दिलाकर उसे मोक्ष की प्राप्ति करवाना है | आस्तिक और नास्तिक रूप से दर्शन के दो भाग है |

○ आस्तिक रूप से दर्शन के 6 प्रकार / भाग है :

- मीमांसा
- न्याय
- वैशेषिक
- सांख्य
- योग
- वेदान्त

○ नास्तिक या अवैदिक रूप से :

- चार्वाक दर्शन
- बौद्ध दर्शन
- जैन दर्शन

दर्शन से मानवीय जीवन में समस्याओ को हल करने में उपयोगी है | जैसे की अस्तित्व दर्शन में व्यवस्था एवं समस्या का समाधान और अव्यवस्था एवं समस्या को दर्शाया गया है | अगर मनुष्य जीवन में व्यवस्था स्थापित हैं तो उनको जीने का नियम भी है |

इस रिपोर्ट में दर्शन के भाग रूप से जैन एवं मध्यस्थ दर्शन के बिन्दुओ का अध्ययन एवं तुलनात्मक विवरण का प्रयोजन है | और वर्तमान समस्याओ का दर्शन के संदर्भ में अध्ययन एवं निवारण करने का भी प्रयत्न किया गया है |

पृष्ठ भूमि एवं/या प्रामाणिकता

भारतीय ज्ञान परंपरा [IKS] के द्वारा दिए गये 18 विसय में से दर्शन ; जिसके भाग रूप जैन दर्शन और मध्यस्थ दर्शन को इस प्रोजेक्ट मे दर्शाया गया है |

मैंने इस प्रोजेक्ट को इस वजह से चुना क्योंकि ;वर्तमान परीप्रेक्ष में सर्वोत्तमोमुखी समाधान के सन्दर्भ में जैन दर्शन आवश्यक है क्योंकि इसमें मन की समस्त इच्छाओ और कामनाओ रागद्वेष पर विजय प्राप्त करने की बात कही है जैन दर्शन में जीव और कर्मों का सम्बन्ध बताया गया है एवं सत्य का अनुसन्धान किया गया है जैन दर्शन के साथ मध्यस्थ दर्शन के तुलनात्मक अध्ययन पूर्वक अस्तित्व में व्यवस्था का स्वरूप और मानव में व्यवस्था का स्वरूप स्पष्ट होता है व्यवस्था के आधार पर मानव से सम्बन्धित जितनी भी समस्या है उनके उत्तर मध्यस्थ दर्शन में प्रस्तुत है , प्रमाणित है इसे निरीक्षण , परीक्षण , सर्वेक्षण पूर्वक शोध पूर्वक जांचा जा सकता है और मानव की सभी आयामों और परिस्थितियों में यह उत्तर की प्रासंगिकता को पहचाना जा सकता है।

मध्यस्थ दर्शन मे सहसतीत्व की बात की गई है | जिसमे सहसतीत्व को सामाजिक धोरण पर भी बताया गया है | इंसान के जन्म के बाद कुदरती रूप से कई संबंध प्राप्त होते है उस संबंधो को उसे कैसे निभाना चाहिए वो मध्यस्थ दर्शन में बताया गया है | संबंधो के प्रकार ;

1. जन्म संबंध - माता – पिता,पुत्र – पुत्री,भाई - बहन उनसे संबंधित सभी संबंध
2. शिक्षा संबंध - गुरु - शिष्य
3. व्यवहार संबंध - मित्र , वरिष्ठ , कनिष्ठ (आयु के आधार पर)
4. व्यवस्था संबंध - परिवार सभा विधि |
5. परिवार संबंध - परिवार संबंध में पति - पत्नि सहित सभी संबंध समाये रहते हैं ।
6. उत्पादन प्रौद्योगिकी संबंध : - साथी – सहयोगी,स्वामी – सेवक,साधन साधक,साध्य |

ऊपर दर्शाये संबंधो में अविश्वास, ईर्ष्या, राग-द्वेष की वजह से संबंध टूटते है परंतु उनको सही समाज और ज़िम्मेदारी के साथ दूर किस जा सकता है जो मध्यस्थ दर्शन में समावेशित है |

जैन दर्शन में कर्म बंधन का कारण भी बताया गया है |

बंधन का कारण

अगर जीव स्वभाव से शुद्ध चैतन्य स्वरूप और अनंत चतुष्टय का स्वामी है तो फिर वह बंधन में कैसे पड़ जाता है ? मिथ्या दर्शन , मिथ्या ज्ञान और मिथ्या चरित्र ये तीन जीव के बन्धन के कारण हैं तीर्थकरों और उनके उपदेशों में श्रद्धा नहीं रखना मिथ्या दर्शन है । तत्वों के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान नहीं रखना मिथ्या ज्ञान है । राग और द्वेष से युक्त होकर लिप्तभाव से कर्म करना मिथ्या चरित्र है |

जैन दर्शन एवं मध्यस्थ दर्शन में समाये गये मुख्य बिन्दुओ जैसे की विजय एवं अहिंसा की वर्तमान जीवन में सही मात्रा में परिभासा और अन्य बिन्दु जैसे की निर्जरा , कर्म , मोक्ष , ज्ञान , योग , आकिंचन्य (अपरिग्रह) को भारतीय शैक्षणिक विभाग में लाकर छात्रो को इसका पठन करवा कर दर्शन को वर्तमान पेढ़ी में पुनर्जीवित किया जा सकता है |

इससे पहले भूतकाल में कभी भी जैन दर्शन एवं मध्यस्थ दर्शन का विवरातमक और तुलनात्मक अध्ययन नहीं हुआ है |

परियोजना का विवरण

• जैन दर्शन

जैन शब्द की व्युत्पत्ति " जिन " शब्द से हुई है जिसका अर्थ विजेता है | जैन दर्शन में विजेता उन्हे माना गया है जिन्होंने इच्छाओ एवं मन पर विजय प्राप्त किया है और हमेशा के लिए संसार से मुक्ति प्राप्त कर ली है |जैन दर्शन को अनेकान्तवाद माया गया है |

- जैन दर्शन को अनेकांतवाद क्यू कहा जाता है ?

जैन दर्शन में अनेकांतवाद या विभाज्यवाद , सापेक्षवाद और स्याद्वाद में पर्याप्त संबंध है । ' अनेकांत ' शब्द ' अनेक ' एवं ' अंत ' दो शब्दों से मिलकर बना है । ' अंत ' का अर्थ यहाँ ' धर्म ' है । अनेकांतवाद वह सिद्धांत है जो विश्व की समस्त वस्तुओं में दो प्रकार के विरोधी सत्यों को स्वीकार करता है , जैसे- आकाश नित्य भी है और अनित्य भी । अनेकांतवाद सिद्धांत के अनुसार कोई भी मत पूर्णरूप से मिथ्या नहीं कहा जा सकता । जैन दर्शन में पदार्थ के अनेक धर्मों को स्वीकार किया गया है।

“अनंतधर्मकं वस्तुः ।”पदार्थ अनन्त धर्मात्मक होता है ।

जड़ और चेतन में , अनात्मा और आत्मा में अनेक धर्म एवं गुण होते हैं । एकांत का अर्थ एक में अंत होनेवाला या केवल सत्ता को माननेवाला है । अनेकांत का अर्थ अनेक में अंत होनेवाला या बहुत गुणों को माननेवाला है । प्रत्येक पदार्थ में विविध गुणों की सत्ता की स्वीकृति अन्य दर्शनों में भी है किंतु पदार्थ को अनंत धर्मात्मक माननेवाले सभी दर्शन अनेकांतवादी नहीं हैं । अनेकांतवाद एकांतवादी का निषेध करता है । प्रत्येक पदार्थ स्वसत्ता , स्वक्षेत्र , स्वकाल एवं स्वभाव से अस्तिरूप है और प्रत्येक पदार्थ परसत्ता , परक्षेत्र , एवं परस्वभाव की अपेक्षा से नास्तिरूप है ।

- जैन दर्शन में तीन परंपराओं का समावेश है । :

- मोक्ष
- कर्म का सिद्धांत (कर्मवाद)
- पुनर्जन्म

- मोक्ष

जैन दर्शन में मोक्ष का अर्थ है कर्मों की मुक्ति । मोक्ष प्राप्त करने के बाद जीव (आत्मा) जन्म मरण के चक्र से निकल जाता है , सभी कर्मों का नाश करने के बाद मोक्ष की प्राप्ति होती है । मोक्ष के उपरांत आत्मा अपने उच्च शुद्ध स्वरूप (अनंत ज्ञान, अनंत धारणा, अनंत शक्ति या असीमित ऊर्जा, अनंत सुख) में आ जाती है । मोक्ष प्राप्ति हर मानुष्य के लिए उच्च लक्ष्य माना गया है । जिसका अर्थ है की अब मनुष्य को किसी दुख की अनुभूति नई होती है , क्यूकी वो अब कर्मचक्र से बाहर है । यह जन्म, जीवन, दुख और मृत्यु के चक्र में कभी नहीं लौटता । आत्मा की यह अवस्था मुक्त या पूर्ण अवस्था है, और इसे "निर्वाण" कहा जाता है।

मोक्ष प्राप्ति का मार्ग

जैन दर्शन के अनुसार मोक्ष प्राप्ति के मुख्य उपाय एक ही है : सम्यक दर्शन
सम्यक ज्ञान
सम्यक चारित्र

सम्यक दर्शन , सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र मोक्ष के मार्ग है । भारत के दर्शनों में मोक्ष के लिए इन तीन मार्गों में से किसी एक को आवश्यक माना गया है । जैन दर्शन में इन तीन मार्गों का समन्वय किया गया है ।

सम्यक दर्शन

यहा सम्यक दर्शन का तात्पर्य जैन सिद्धांतों , तीर्थकरो के उपदेशो और शिक्षाओ में आंतरिक विश्वास या श्रद्धा रखना अथवा धर्म को जानना और जैन दर्शन द्वारा दिखाये गए मार्ग पर चलना | किन्तु इसका अर्थ यह नई की यहा अंधश्रद्धा को आश्रय दिया गया है , बल्कि इसका अभिप्राय यह है की केवल युक्तिसंगत बातों में ही श्रद्धा या विश्वास रखा जाय | जैन सिद्धांतों एवं तीर्थकरो का अनुकरण करके निश्चित ही मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है |

सम्यक ज्ञान

मोक्ष प्राप्ति में ज्ञान भी आवश्यक माना गया है । जीव और अजीव का अन्तर समझना एवं वास्तविकता की पहचान करना ही सम्यक ज्ञान है । भारतीय दर्शनों की भाँति जैन दर्शन भी यह मान्यता है कि अज्ञान ही बंधन का मूल कारण है । इसलिए मोक्ष की प्राप्ति में ज्ञान का महत्त्वपूर्ण योगदान है । जैनदर्शन के अनुसार ज्ञान के पाँच भेद हैं । यथा - मति , श्रुत , अवधि , मनःपर्याय और केवलज्ञान ।

1. मतिज्ञान : जो ज्ञान मन और इंद्रिय द्वारा प्राप्त हो , उसे मतिज्ञान कहते हैं ।
2. श्रुतज्ञान : सुने हुए वचन एवं ग्रंथों से प्राप्त ज्ञान ही श्रुतज्ञान है ।
3. अवधिज्ञान: अत्यंत दूरस्थ , सूक्ष्म तथा स्पष्ट वस्तुओं का ज्ञान ही अवधिज्ञान है ।
4. मनःपर्यायज्ञान: राग - द्वेष पर विजय पाने के बाद व्यक्ति दूसरों के भूत और वर्तमान विचारों को जान लेता है , यही मनःपर्यायज्ञान है ।
5. केवलज्ञान: यह ज्ञान पूर्णज्ञान है , जो केवल मुक्त जीवों को ही प्राप्त होता है । इस ज्ञान के द्वारा भूत , वर्तमान और भविष्य तीनों कालों की वस्तुओं का ज्ञान प्राप्त होता है । इसके द्वारा विश्वमात्र के समस्त द्रव्यों और उनके पर्यायों का ज्ञान होता है ।

इस प्रकार ज्ञान भी मोक्ष प्राप्ति के लिए महत्त्वपूर्ण साधन है ।

सम्यक चरित्र

इसमें विश्वास और ज्ञान सैधांतिक है | जैन दर्शन में विश्वास और ज्ञान के साथ साथ चरित्र की सुद्धि पर भी ध्यान दिया गया है | उच्च एवं पवित्र आचरण ही व्यक्ति के लिए मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है | अशुद्ध एवं अपवित्र आचरण व्यक्ति को पतन के मार्ग पर धकेल देता है | इसलिए चरित्र की शुद्धि एवं पवित्रता को मोक्ष का महत्त्वपूर्ण साधन बताया गया है |

सम्यक चारित्र्य के लिए जैन दर्शन में " पंचतत्व " का पालन आवश्यक है | 1. अहिंसा(मन, वचन और कर्म से किसी को हानि न पहुचाना) जैन दर्शन में अहिंसा का स्वरूप अत्यंत आवश्यक है | 2. सत्य(—मन, वचन और कर्म में सत्यपरता) 3. अस्तेय(किसी की सम्पत्ति का हरण नहीं करना), 4. ब्रह्मचर्य(मन, वचन , कर्म से नैष्ठिक जीवन व्यतीत करना) और 5. अपरिग्रह(मन, वचन, कर्म से संग्रह का त्याग) इन महाव्रतों का आपस में घनिष्ठ संबंध है | ऊपर दर्शाए वृत्तों का पालन करके मनुष्य मोक्ष प्राप्ति योग्य हो जाता है | कर्मों का आश्रय जिव में बंध हो जाता है तथा पुराने कर्मों का क्षय हो जाता है | इस प्रकार जिव अपनी स्वाभाविक अवस्था को प्राप्त करता है | यही बंधन क्षय या मोक्ष है |

○ कर्म का सिद्धान्त (कर्मवाद)

कर्म सिद्धान्त जैन दर्शन का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त है । इसका अतीत , वर्तमान और भविष्य तीनों काल के साथ है अतः इसे समझे बिना जीवन को समग्रता से नहीं समझा जा सकता है । संसार में विचित्रता और विविधता दिखाई देती है । कोई गरीब है , कोई अमीर है , कोई सुखी है , कोई दुखी है ,

कोई सुन्दर है कोई कुरूप है , कोई पशु है , कोई पक्षी है , कोई एक इन्द्रिय वाला है , कोई पाँच इन्द्रिय वाला है । इस विविधता का हेतु कर्म है । कर्म के कारण ही सभी जीवों की स्थिति दिशा में अन्तर है ।

कर्म की परिभाषा

कर्म शब्द का शाब्दिक अर्थ क्रिया है जैसे - पढ़ना , खाना , सोना आदि क्रियाएँ कर्म है। लेकिन जैन दर्शन में कर्म शब्द का प्रयोग क्रिया अर्थ में न होकर एक विशेष अर्थ में हुआ है । जैन दर्शन के अनुसार कर्म पुद्गल है क्यूकी आत्मा की अच्छी या बुरी प्रवृत्ति के वजह से इन्हीं पुद्गलों को कर्म कहते हैं ।इंसान जिस भाव से कोई कर्म करता है उसी प्रकार उसका फल अंत में प्राप्त करता है ।

जैन दर्शन के अनुसार जब कोई कर्म किया जाता है तो उस कर्म के परमाणु आठ भागों में विभक्त हो जाते है , और आत्मा के स्वाभाविक गुणों को प्रगट नहीं होने देते । आत्मा अनन्तज्ञान सम्पन्न है । संसार में जितनी आत्माएं है , उन सबमें अनन्तज्ञान विद्यमान है । परन्तु ज्ञानावरणीयकर्म आत्मा के इस अनन्तज्ञान को आच्छादित कर देता है । ज्ञानावरणीय कर्म आंख की पट्टी के समान है । जिस प्रकार आंख के आगे पट्टी बांधने से देखने में रुकावट होती है , वैसे ही ज्ञानावरणीय कर्म आत्मा की ज्ञानशक्ति का निरोध करता है । जो कर्म आत्मा की साक्षात्कार करने की शक्ति के आवरण करने में निमित्त हैं वे दर्शनावरणीय कर्म हैं । दर्शनावरणीय कर्म प्रतिहारी के समान है ।

जैन दर्शन में कहा गया है " जैसा कर्म बंधा हुआ है , वैसा फल भोगना पड़ेगा " इस कथन की वास्तविकता को न समझने के कारण कुछ लोगों की यह धारणा बन जाती है कि कर्म बंधन में परिवर्तन नहीं किया जा सकता " जैसा बांधा है , वैसा ही भोगना पड़ेगा " उसे शिथिल नहीं किया जा सकता । विज्ञान के अनुसार यह बात सत्य है कि जैसा कर्म बंध होता है , वैसा ही उसका फल कर्ता भोगना पड़ता है तथापि यह भी सत्य है कि उसमें परिवर्तन किया जा सकता है ।

जैन दर्शन के अनुसार दो प्रकार के कर्म माने जाते हैं - निकाचित कर्म और दलिक कर्म जिन कर्मों में परिवर्तन नहीं किया जा सकता , वे निकाचित कर्म कहलाते हैं तथा जिन कर्मों में परिवर्तन किया जा सकता है , वे दलिक कर्म कहलाते हैं। जीव के शुभ - अशुभ भावधारा के आधार पर दलिक कर्मों में परिवर्तन होता रहता है ।

जीव के शुभ-अशुभ भावधारा पर दलीक कर्मों में परिवर्तन होता रहता है । जैन दर्शन के अनुसार प्रत्येक पदार्थ पर्याय की द्रष्टि से परिवर्तनशील है । परिवर्तन की यह प्रक्रिया कर्म के साथ जुड़ी हुई है,जिसके आधार पर कर्म की निम्नलिखित दस अवस्थाए बनती है ।

इसके उपरांत जैन दर्शन में कई बिन्दुओ का विवरण भी किया गया है जो वर्तमान समय की समस्याओ से संबन्धित है एवं उन समस्याओ से बाहर आने का मार्ग भी बताता है ।

○ विजय :

व्यवहार में विजय – पराजय का द्वन्द हो वहा पर हिंसा , वेर , राग , द्वेष , परिग्रह , पूर्वग्रह , दुश्मनावट और असूया जैसे दूषण अपने आप ही फाइल्लते है । व्यवहार में विजय को हमेशा किसी दूसरे इंसान , दूसरे पक्ष , दूसरे समाज , दूसरे राज्य के साथ जोड़ा जाता है ।परंतु जैन दर्शन के मुताबिक विजय शब्द का कुछ और मतलब है । जिसमे विजय अपनी वृत्तिया , अप्रयप्तताओ एवं इंद्रियो पर प्राप्त करना है । कीसी दूसरे व्यक्ति पर विजय प्राप्त कर्नर पर भी इंसान अपनी इंद्रियो पर विजय प्राप्त नई कर सकता । उच्च और सरल जीवन के लिए मनुष्य को अपनी इंद्रियो पर विजय प्राप्त करना बहुत

अनिवार्य है | विजय के लिए प्रयत्नशील रहना वही जीवनसाधना है | एवं ये ऐसा विजय है | जिसमें किसी की पराजय नहीं होती |

○ अहिंसा :

“ अहिंसा परमो धर्मः ”

अहिंसा जैन दर्शन का केंद्रस्थ बिन्दु है | अहिंसा का विनियोग कैसे किया जाए ? उसकी रूपरेखा जैन दर्शन में दर्शाई गई है | अहिंसा मात्र जीवड़ाया में ही नहीं समाई है | अहिंसा का अर्थ राग , द्वेष , लोभ , ईर्ष्या , वैराग्य , ममत्व , अहंकार की हठ से मुक्त मनकी प्रशांत अवस्था है |

जैन दर्शन में हिंसा की परिभाषा को भी बताया गया है | हिंसा का संदर्भ मुख्य रूप से स्वयं को आघात करने से है – अर्थात् वह व्यवहार जो आत्मा की अपनी क्षमता को मोक्ष (जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति) प्राप्त करने से रोकता है | साथ ही , इसका मतलब दूसरों के प्रति हिंसा भी है , क्योंकि दूसरों को नुकसान पहुंचाने की प्रवृत्ति से अंततः स्वयं की आत्मा को ही हानि पहुँचती है | इसके अलावा , अहिंसा की अवधारणा का विस्तार जैनों ने न केवल मनुष्यों तक , बल्कि सभी जानवरों , पौधों , सूक्ष्म जीवों और सभी प्राणी जिनमें जीवन या जीवन की संभावना हो , तक करते हैं | प्रत्येक जीवन पवित्र है और हर किसी के पास अपनी अधिकतम क्षमता तक अभयपूर्वक जीने का अधिकार है | जीवित प्राणियों को उन लोगों से भय नहीं रहता जिन्होंने अहिंसा का व्रत लिया हो |

○ तत्त्व

जैन दर्शन में तत्त्व का अर्थ समजाया गया है और आत्मा के तीन प्रकार भी बताए हैं | जो नीचे दर्शाया गया है ;

तत्त्व का अर्थ है प्रयोजन भूत वस्तु | जो अपने मतलब की वस्तु है और जिससे अपना हित अथवा स्वरूप पहचाना जाता है वह तत्त्व है |

" तस्य भावः तत्त्वम् " अर्थात् वस्तु के भाव (स्वरूप) का नाम तत्त्व है |

○ आत्मा

जैन दर्शन में आत्मा को जीव भी बताया गया है , आत्मा के साक्षात्कार की बात कही गयी है | जैन दर्शन तो पूरी तरह आध्यात्मिक है | अतः इसमें आत्मा को तीन श्रेणियों में विभक्त किया गया है |

1. बहिरात्मा – इंद्रिय समूह को आत्मा माननेवाला
2. परमात्मा – कर्म कलंक से विमुक्त आत्मा
3. अंतरात्मा – देह से भिन्न आत्मा का स्वीकार करनेवाला

आत्मा को बहिरात्मा , जागृत आत्मा को अंतरात्मा और गुणों से सम्पन्न आत्मा को परमात्मा कहा गया है | ये एक ही आत्मा की विकसित तीन श्रेणियाँ हैं |

जीव (आत्मा) कर्ता और भोक्ता दोनों है | कर्ता – सांसारिक कर्मों (कर्म करने में जीव सम्पूर्ण रूप से स्वतंत्र है | वह शुभ , अशुभ कर्म से स्वयं अपने भाग्य का निर्माण कर्ता है) में भाग लेता है | भोक्ता – जीव अपने शुभ – अशुभ कर्मों के कारण सुख और दुःख भोक्ता है |

आत्मा का आकार भीन्न- भीन्न होता है । जैसे की अगर आत्मा हाथी के शरीर में ग्रहण हो तो उसका आकार बड़ा होगा और अगर चींटी के शरीर में उसका आकार छोटा होता है ।जैसे की प्रकाश का कोई निश्चित आकार नहीं होता पर छोड़ा सा प्रकाश का किरण पूरे घर में उजाला फैलाता है ।इस लिए आत्मा का आकार अलग- अलग शरीर में भीन्न होता है ॥

○ अपरिग्रह

जैन दर्शन मे अवश्यकता से ज्यादा परमाणु रखने को परिग्रह कहा गया है । उदाहरण के रूप में ; आज ऊर्जा की कमी भी परिग्रह का ही परिणाम है ।दुनिया की 6% वस्ती दर्शाने वाला देश अमेरिका 36% ऊर्जा का उपयोग करता है । वैश्विक तौर पर यह भी एक परिग्रह है । इसलिए वर्तमान समय में इंसान को अपरिग्रह को अपनाना चाहिए ॥ जैन दर्शन में बताया गया है की एक इंसान का दूसरे इंसान के साथ सुमेलपूर्ण संबंध के लिए अपरिग्रह का जीवन में योग्य स्थान होना जरूरी है ।

○ मानवीय मूल्य

जैन दर्शन में मानवीय मूल्यको भी बताया गया है । उसमे मनुस्य को कैसे जीवन जीना चाहिए और जीवन जीने के आदर्श गुणो को भी दर्शाया गया है । आज के समय की समस्याओ के निवारण को भी बताया गया है । जैन दर्शन के समावेशित मानवीय मूल्य नीचे दर्शाये गए है ।

अनासक्ति - यह सांसारिक चीजों या संपत्ति पर कब्जा न करने पर केंद्रित है। उनके अनुसार, आसक्तियों के परिणामस्वरूप व्यक्ति के व्यक्तित्व को सीधा नुकसान हो सकता है।

तपस्या- जैन धर्म सबसे मजबूत तपस्या का पालन करता है। इस तरह के जीवन का अर्थ है नग्नता या यहां तक कि कपड़े का भी न होना, उपवास रखना, शरीर का वैराग्य आदि पुराने कर्मों से मुक्त होना और नए कर्म पर संयम रखना। महावीर ने बारह वर्ष की कठोर तपस्या कर एक अच्छे तपस्वी जीवन की मिसाल कायम की है।

चोरी नहीं करना - एक जैन भिक्षु को हमेशा दूसरों से कुछ भी प्राप्त करने के लिए आवश्यक अनुमति लेनी चाहिए और केवल उन चीजों को स्वीकार करना चाहिए जो दूसरों द्वारा स्वेच्छा से दी जाती हैं। वे चोरी और चोरी के सख्त खिलाफ हैं।

ध्यान - ध्यान तपस्या का एक रूप है। इसका मतलब है कि व्यक्ति को शुद्ध होना चाहिए। व्यक्ति को स्वार्थ छोड़कर ज्ञान बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए।

नैतिकता और गुण- एक अच्छा जीवन जीना चाहिए और साथ ही दैवीय पूर्णता की ओर बढ़ना चाहिए। जीवों की पीड़ा और हानि से बचने के लिए धर्म का अभ्यास सबसे आवश्यक है। जैन दर्शन के कुछ गुण नम्रता, पवित्रता, अनासक्ति, आत्म-संयम, अति सहनशीलता, सीधे आगे, सच्चाई और पूर्ण त्याग आदि हैं।

पुरुषों और महिलाओं की समानता- जैन दर्शन का उद्देश्य सभी पुरुषों और महिलाओं को समानता प्रदान करना है।जैन दर्शन के अनुसार महिलाओं को अपने पिता, भाइयों, पति और यहां तक कि देवर से भी सम्मान और सम्मान प्राप्त करना चाहिए।

शिक्षा - यह जीवन में काफी अभिन्न और आंतरिक है जो केवल ज्ञान के अधिग्रहण से परे है। शिक्षा का अर्थ है ज्ञान, दृष्टि और एक अच्छे ध्वनि चरित्र का निर्माण जिसका उद्देश्य मुक्ति प्राप्त करना है। जैन धर्म का जीवन जीने का तरीका गुणवत्ता आत्मा प्राप्त करने के लिए अपने आप को शिक्षित करना है जो हमें पूर्णता और सभी सांसारिक दुखों से मुक्ति दिलाएगा।

- मध्यस्थ दर्शन :

मध्यस्थ दर्शन क्या है ? मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) भारत वर्ष में निर्गमित एक नया दर्शन है जो श्री अग्रहार नागराज द्वारा प्रतिपादित एवं लिखित है | यह "अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन" है | दर्शन का तात्पर्य वास्तविकता को जैसे है वैसे ही समझने तथा प्रकट करने से है | मध्यस्थ दर्शन में बताया गया है की ,अस्तित्व सहअस्तित्व है | यही परम सत्य है |

मध्यस्थ दर्शन मे सहसतीत्व की व्याख्या – साथ होना है | किसका साथ होना ? व्यापक (खाली स्थान); इकाई (परमाणु) जिसमे से व्यापक को ऊर्जा के स्वरूप माना गया है | और ऊर्जा को ईश्वर कहा गया है | उसी प्रकार खाली जगह जो इकाई को समा लेता है इसी वजह से उसे ऊर्जा का स्वरूप बोला गया है | इकाई जो परमाणु है जिसमे से अणु और कई अवस्थाओ का निर्माण होता है |

यह वर्तमान में प्रचलित किसी भी आस्थावादी व ईश्वर केन्द्रित कार्यक्रमों से सुख पाने के आदर्शवादी चिंतन अथवा भौतिक वस्तु सम्बंधित सुविधा का भोग कर सुख पाने वाले कोई भौतिकवादी विचार से अलग विचार प्रस्तुत कर रहा है | इस विचार का मूल आधार अनुभव मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ज्ञान है |

मध्यस्थ दर्शन का सम्पूर्ण विषय वस्तु सार्वभौमिक और सार्वकालिक है अर्थात यह सभी जगह सभी समय एक जैसा ही रहता है | धरती के सभी मानव को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित कर रहे प्रमुख बिंदु जैसे की , वर्तमान स्थिति में धरती का ताप बढ़ रहा (ग्लोबल वॉर्मिंग) , जल एवं वायु का प्रदूषित होना तथा सभी मानव समुदायों की असुरक्षा बढ़ते जाना | जबकि , हमारी मूलभूत आवश्यकता है की धरती संतुलित बनी रहे , ऋतु संतुलन बना रहे , तथा धरती का हर मानव अक्षुण्ण बना रहे | यद्यपि , इन मुलभूत आवश्यकताओं को पूरा करने का सम्पूर्ण तार्किक , व्यवहारिक और जीने योग्य उपाय को मध्यस्थ दर्शन के वांग्मय में प्रस्तुत किया हुआ है |

इस धरती पर अवस्थित सभी जीवों में से केवल मानव ही यह सम्पूर्ण अस्तित्व का ज्ञाता (जानने वाला) है | जानने की संपूर्ण वस्तु तीन है ; सहअस्तित्व के रूप में अस्तित्व , जीवन परमाणु तथा मानवीयता पूर्ण आचरण | इसको सरल भाषा में सहअस्तित्व का ज्ञान , जीवन का ज्ञान तथा मानवीयता पूर्ण आचरण का ज्ञान बताया गया है |

यह पदार्थ की प्रकृति , चेतन , अंतरिक्ष और विकास की व्याख्या करता है और इस प्रकार मनुष्य और अस्तित्व को नष्ट कर देता है | यह व्यापक ज्ञान प्रणाली (दर्शन) मानव जीवन के सभी आयामों की जांच और स्पष्टता प्रदान करती है : अनुभवात्मक , तर्कसंगत , भावनात्मक और व्यावसायिक | ' सह - अस्तित्ववादी दर्शन ' किसी जाति , धर्म या संप्रदाय पर नहीं , बल्कि प्राकृतिक नियमों पर , वास्तविकता पर आधारित है - इस तरह से कि हर इंसान उन्हें अपने अधिकार में समझ सके और इस समझ के साथ जी सके | चूंकि यह चेतना की उत्पत्ति और प्रकृति को उजागर करता है , मध्यस्थ दर्शन (सह - अस्तित्व दर्शन) तत्वमीमांसा , ऑन्कोलॉजी , ज्ञानमीमांसा , स्वयंसिद्ध , नैतिकता , संज्ञानात्मक विज्ञान और मस्तिष्क सिद्धांत में महत्वपूर्ण सफलता प्रदान करता है |

मध्यस्थ दर्शन अस्तित्व में अनुभव की ही अभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन है|यह 'साधना-समाधि-संयम विधि' से प्राप्त हुआ है | यह दर्शन स्वयं प्रयोग व्यवहार और अनुभवात्मक प्रमाणों के कसौटी से निकला हुआ है, इसीलिए निर्विवाद है|

मध्यस्थ दर्शन के अनुसार अहिंसा के स्थान पर दयापूर्ण कार्य व्यवहार की बता की गई है | जिसका यह मतलब है की मानव और मानव के अलावा अन्य प्रकृति के साथ मानवता के अर्थ में किया गया

कार्य या व्यवहार | मध्यस्थ दर्शन में मोक्ष मतलब भ्रम मुक्ति , समस्याओं से मुक्ति , जीसका सुख स्वभाव है उसकी अनुभूति को मोक्ष कहा गया है |

वर्तमान परिस्थितियों का हल लाने का प्रयास मध्यस्थ दर्शन द्वारा किया गया है जैसे की उदाहरण के रूप में नीचे दर्शाया गया चित्र ;

अमानवीय प्रवृत्तियां

से उत्पन्न आवेग

संग्रह, अविद्या, अभिमान, भय, असंयम



हठ - जिद्ध



आवेश - अव्यवस्था



वैचारिक नारकीयता

संग्रह	-	लोभ	-	शोषण
द्वेष	-	विरोध	-	द्रोह-विद्रोह
अविद्या	-	अज्ञान	-	भ्रम
भय	-	आतंक	-	हिंसा
अभिमान	-	उद्धण्डता	-	अपराध



व्यावहारिक क्लेश

परनारी/परपुरूष, परधन, परपीडारत कार्य एवं व्यवहार



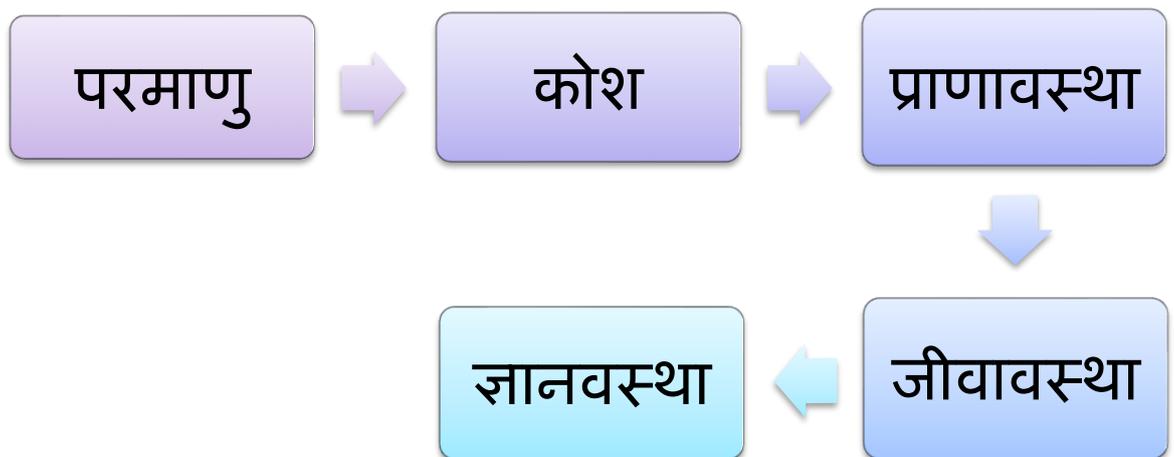
विचार अपूर्ति

द्वेष विचार, अपराध, अस्थिरता, अज्ञान, उद्धण्डता, आतंक

उपरचार्ट के रूप में दिखाया गया है की सर्व प्रथम मनुष्य की अमानवीय प्रवृत्तियों से उत्पन्न आवेश संग्रह , अविद्या , अभिमान, भय , असंयम उत्पन्न करता है । और जिससे हठ- जिद में परिणामता है । इस आवेश एवं अव्यवस्था के कारण अनेक अमानवीय प्रवृत्तियाँ एवं निर्गुण मानव में फैलती है । किसी एक मनुष्य की इन फैलते निर्गुणों के कारण आसपास का वातावरण एवं दूसरे अन्य कई मनुष्यों के स्वभाव एवं मन पर असर करता है । द्वेष, अविद्या , भय , विरोध , आतंक , शोषण , भ्रम , अपराध के कारण व्यवहारीक क्लेष होता है । जैसे की परनारी / परपुरुष शोषण , द्वेष , अभिमान , हिंसा उसी प्रकार परधन के प्रति लोभ , लालच , अपराध ; परपीड़ारत कार्यों के रूप में आतंक , विरोध , शोषण ; अंत में व्यपहार में हर किसी संबंध के बिच अविश्वास , क्रोध , असंयम , द्वेष , ईर्ष्या उत्पन्न होती है । और मनुष्य सुखी एवं उच्च जीवन जीने के योग्य कभी नहीं बन सकता ।

इनविचारअपूर्तिऔरअमानवीयप्रवृत्तिओसेउत्पन्नहुईअनेकसमस्याओं का निवारण भारतीय दर्शन में दर्शाने का प्रयास किया गया है । जैसे की मध्यस्थ दर्शन में समावेशित अस्तित्ववाद में अखंड सामाजिक रचना के लिए हर एक संबंध को बताया गया है , और दयापूर्ण व्यवहार जो मानव - मानव , मानव- प्रकृति और मानव और अन्य जीवो के बारे में भी बताता है । और उसमें भोक्ष की परिभाषा को और उसको प्राप्त करने के मार्ग के बारे में भी बताया गया है । उसी प्रकार जैन दर्शन में सहअरवित्ववाद , अहिंसा , मोक्ष के बारे में चर्चा की गई है । उसके साथ उसमे कर्मवाद जीसमें बताया गया है । इंसान जैसे कर्म करता है उसी प्रकार भोगता है । जीससे अच्छे कर्म करे और उच्च जिवन जिये । फिर विजय , अपरिग्रह का विवरण किया है । इसी प्रकार दोनो दर्शानो में उन समस्याओं का समाधान एवं उन समस्याओं से कैसे दूर रहा जाए वो भी बताया गया है ।

परमाणु से लेकर ज्ञानवस्था तक की हर एक अवस्था को मध्यस्थ दर्शन के संदर्भ में दर्शाने का प्रयास किया गया है ।

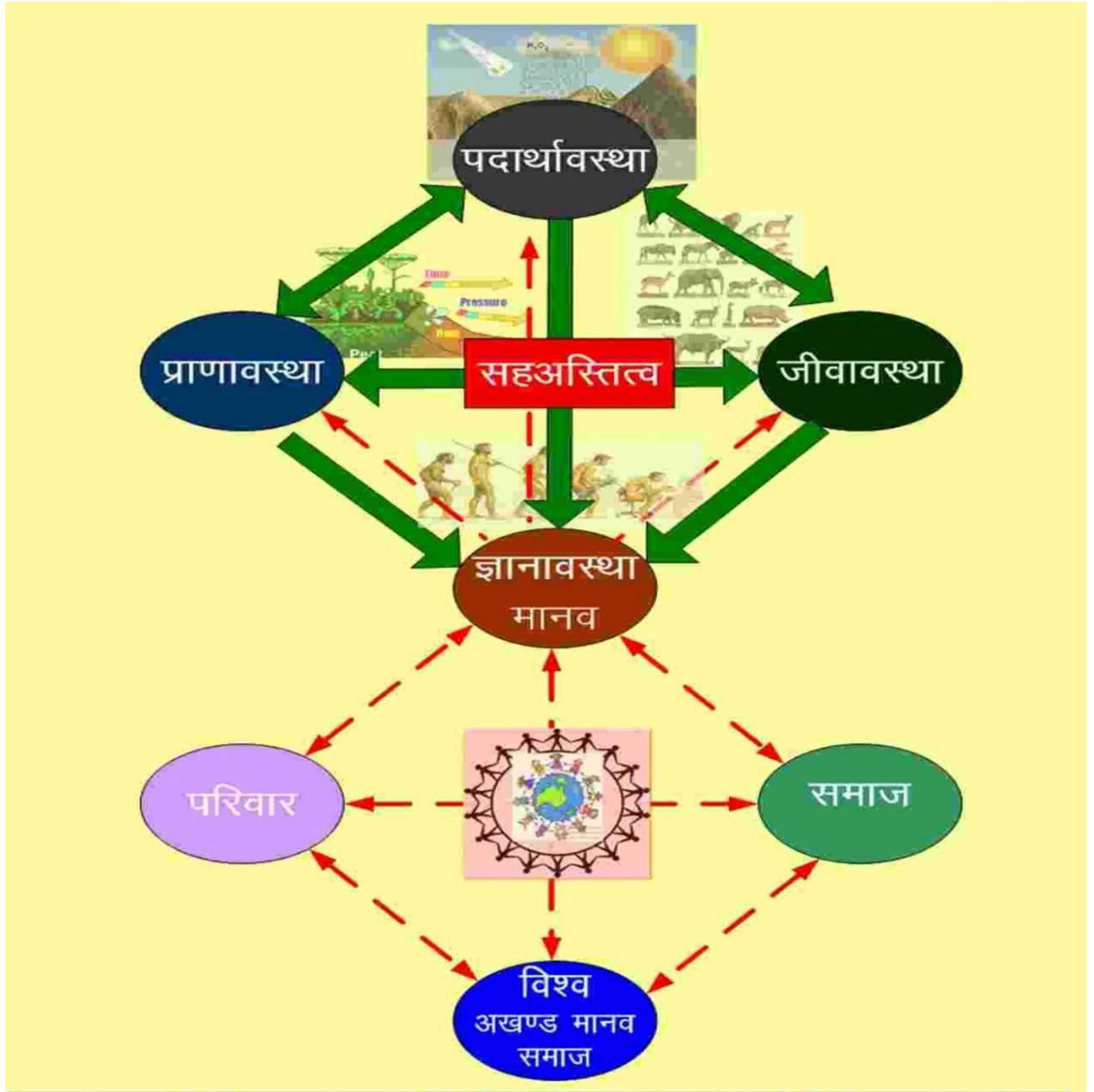


- प्राणावस्था – जिसमे पेड़ , प्राणी , पक्षी , मनुष्य शरीर का समावेश होता है ।

- जीवावस्था – जीसमे चैतन्य हो उसका समावेश होता है | जैसे की पशु, प्राणी, मनुष्य |
- ज्ञानवस्था –जेसमे मनुष्य का समावेश होता है | जिसका मतलब अनुभव या समज |

प्राणावस्था, जीवावस्था में प्रजाति, जाति होती है | उसी प्रकार मनुष्य में अलग अलग जाति नई होती ; वोह खुद हि एक जाति है | फिर भी आज के समय में रंग, देश, शिक्षण के धोरण पर भेद किया जा रहा है |

मध्यस्थ दर्शन में ईश्वर को कर्ता के स्थान पर न रख कर मनुष्य को रखा गया है | क्यूकी हर एक समस्या का कारण हमेशा ईश्वर न होकर मनुष्य है | हिंसा, वेर, राग, द्वेष, इर्शा के कारण ही समस्याओ का सर्जन होता है | और इन समस्याओ के निरवन के लिए ही मध्यस्थ दर्शन है |



पद्धति तथा / अथवा प्रक्रियाएँ

इस इंटरनेट के दौरान मेंने अपने मैटर के अंतर्गत जैन एवं मध्यस्थ दर्शन का अभ्यास किया और अन्य पुस्तकों की मदद भी ली जिससे पुराने और आज के दौर में दोनों दर्शनों की मान्यताओं के बारे में भी पता चला जो नीचे के अनुसंधान में दर्शाया गया है। इस अध्ययन से वर्तमान समस्याएँ जो व्यक्तिगत, सामाजिक, वैश्विक धोरण पर है उस पर मेरा ध्यान भी आकर्षित हुआ और उन समस्याओं का निवारण मध्यथ एवं जैन दर्शन की मदद से कैसे लाया जाए उसको जानने का भी प्रयास किया।

जैन दर्शन नास्तिक दर्शन है। जिसमें ईश्वर की जगह मनुष्य को सर्वोच्च स्थान पर बताया है क्योंकि समाज में हो रहे हर एक शुभ और अशुभ कर्मों का कारण ईश्वर न होकर मनुष्य ही है। वैश्विक धोरण पर देखा जाए तो प्रकृति पर हो रही विपरीत असरों का कारण भी मनुष्य ही है।

सामाजिक धोरण पर देखा जाए तो; जैन दर्शन में परमाणु को " पुद्गल " कहा गया है। जैन दर्शन में परमाणु को एक भौतिक द्रव्य बताया गया है और इंसान इससे कही ना कही जुड़ा हुआ है। इंसान इस परमाणु (कोई वस्तु) के मोह में पड़ता है। जैसे की " धन " एक आखिर पुद्गल का प्रतीक है। जिसकी इंसान को ज़्यादा से ज़्यादा प्राप्त करने की लालच होती है। और उसको प्राप्त करने की लालच में वो कर्म करता है इसी प्रकार कर्म बंदन में फसता है जो जीवन भर चलता है।

वैश्विक धोरण पर देखें तो; मध्यस्थ दर्शन के मुताबिक परमाणु को ऊर्जा के स्वरूप में इंसान उपयोग करता है। और इंसान ज़्यादा से ज़्यादा प्राकृतिक परमाणु का उपयोग करता है परंतु प्रकृति और जीव के बीच की कड़ी को संतुलीत करने के लिए कोई प्रयास नहीं करता। जैसे की अगर कोई इंसान प्राकृतिक वस्तु का उपयोग अपने फायदे के लिये करता है उसके बाद उस प्रकृति को निरंतर बनाए रखने के लिए कोई प्रयास नहीं करता।

परिणाम

मध्यस्थ दर्शन एवं जैन दर्शन के अध्ययन से वर्तमान समस्याओं का सर्वेक्षण करके उन समस्याओं का निवारण लाने का प्रयास किया जा सकता है। दर्शन से यह भी जानने को मिलता है की हर समस्या का कारण अन्य कोई न होकर इंसान की सोच है; उदाहरण के तौर पर तनाव, चिंता है। पारिवारिक तौर पर समस्या का कारण – विस्वास का अभाव। सामाजिक तौर पर शोषण, डर, भ्रष्टाचार, अपराध समस्या का कारण है। प्राकृतिक समस्याएँ प्रदूषण, क्लाइमेट चेंज, ग्लोबल वॉर्मिंग है। इन सब समस्याएँ मानवनिर्मित हैं। जिसमें प्रकृति का कोई भाग नहीं है।

जैन और मध्यस्थ दर्शन के अनेक मुख्य बिन्दु का विवरण है और उसको वर्तमान के जीवन से तुलना भी की गई है और वर्तमान के समय में उनकी परिभाषा भी बताई गई है। उदाहरण के तौर पर संग्रह के साथ चोरी, वैभव के साथ अछत जुड़ती ही जाती है। जिससे कर्मशृंखला उत्पन्न होती है। जिसमें इंसान फसता जाता है। जैन दर्शन में इसके लिए एक अलग शब्द है – ' कर्म-पुद्गल ' जिसका निवारण भी उसमें समवेधित

दोनों दर्शन में परिग्रह (आवश्यकता से ज़्यादा परमाणु को रखना) के बारे में बताया गया है। जो भी वर्तमान समय की समस्या है और जिसका निवारण अपरिग्रह की समझ से हो सकता है। अपरिग्रह के भाव के बारे में भी बताया गया है दर्शन में। और जैन दर्शन में यह भी बताया गया है की अपरिग्रह के बिना अहिंसा का कोई मोल नहीं। उदाहरण के तौर पर – संग्रहखोरी करने वाला कभी अहिंसा का दावा नहीं कर सकता।

मध्यस्थ और जैन दर्शन में कई मानव उद्देश्य को बताया गया है जिसके अध्ययन एवं पालन से उच्च और सरल जीवन जिया जा सकता है। मध्यस्थ दर्शन में समृद्धि के बारे में भी बताया गया है जिसमें आवश्यकता से ज़्यादा समृद्धि रखने वाले इंसान में दया एवं किसिकों बाटने का भाव होना चाहिए।

वैज्ञानिक तरीके से देखा जाए तो हमारे शरीर में कई अंग हैं जिसके कई उसके अपने निश्चित व्यवहार हैं। परंतु उसका स्थान हमेशा अन्य बाकी अंगों के साथ बने शरीर में ही रहता है। यह सभी अंग एक साथ ही पूरे शरीर का पोषण करता है जिससे यह जानने को मिलता है यह पूरा संसार एक व्यवस्था में है जो सहसतीत्व का पूर्ण स्वरूप है।

अर्थव्यवस्था के रूप में देखे तो आज के समय में हर कोई अपने फायदे को देख कर व्यापार करता है। परंतु मध्यस्थ दर्शन में आवश्यकता अनुसार उत्पादन एवं उपभोग होना चाहिए।

इस प्रकार मध्यस्थ और जैन दर्शन में कई समस्याओं का हल करने का प्रयास किया गया है। समावेशित मानव मूल्यों से उच्च एवं सरल जीवन जीना सिखाया गया है।

विचार-विमर्श

मध्यस्थ एवं जैन दर्शन के गहन अध्ययन से मुझे यह जानने को मिला है कि दोनों दर्शन में जीवन के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को दर्शाया गया है एवं जीवन के बाद मिलने वाले मोक्ष के बारे में भी बताया गया है। जैन दर्शन में मोक्ष प्राप्त करने वाले ज्ञानशरीरी जीव को " सिद्धि " कहा गया है और उसमें यह भी बताया गया है कि केवल ज्ञान द्वारा तमाम पदार्थों के जानकार शरीरी जीव को " अहर्त्त " कहा गया है। दोनों दर्शन में मोक्ष को आत्मा का कोई विशिष्ट स्थान की जगह एक अवस्था के रूप में बताया गया है। जो स्थितिविशेष है। जैन दर्शन के अध्ययन से यह भी पता चलता है कि उसमें कर्म की संकल्पना अलग है। जिसमें कर्म के साथ फल का निस्पन्द संबंध है। अपरिग्रह के बारे में भी जैन दर्शन में बोहोत कुछ बताया गया है। वर्तमान समय में जहां संग्रहखोरी, भ्रष्टाचार फैल रहा है उसको दूर करना या तो फैलने से रोकने के लिए मनुष्य को अपरिग्रह के मार्ग को अपनाना चाहिए एवं दूसरों को भी प्रेरित करना चाहिए। जैन दर्शन में यह भी बताया गया है कि मोक्ष की इच्छा रखने वाला शरीर भी परिग्रह है। जैन दर्शन में अहिंसा मुख्य स्थान पर है। जैन दर्शन की दृष्टि में हिंसा – अहिंसा कर्ता के भाव पर पर आधार करता है। शोषण, युद्ध, गरीबी से भरी आज की दुनिया में अहिंसा खूब आवश्यक है।

निष्कर्ष और \ या सिफारिशें

जैन दर्शन में आत्मा को स्वयंप्रकाशित कहा है और जो दूसरी वस्तुओं को भी प्रकाशित करता है। इस प्रकार इसमें से यह सिखने को मिलता है कि जिव (आत्मा) को हमेशा प्रफुलित रहना चाहिए और आसपास के लोगों में भी खुशी को फैलाना चाहिए। उसके आलावा जैन दर्शन में कई मुख्य बिन्दुओं को बताया है जैसे कि विजय, अहिंसा, पुनर्जन्म, कर्मवाद, मोक्ष, अकिंच्य, चेतना जिसमें कई बातें बताई हैं जो मनुष्य जीवन में आवश्यक हैं। और मध्यस्थ दर्शन में सहस्तिव्वाद, अखंड समज रचना का समावेश है जो सामाजिक एवं व्यक्तिगत रूप से किस प्रकार उपयोगी है वो इस रिपोर्ट में मैंने दर्शाने का प्रयास किया है। एवं जैन और मध्यस्थ दर्शन में मानवीय मूल्य हैं जो अज के समय में भी हर स्थान और हर समय मदद रूप हैं।

जैन और मध्यस्थ दर्शन के अध्ययन से मैं यही सिफारिश करना चाहती हू कि हमारे भारतीय शिक्षण में दर्शन का परिचय एवं उसमें समावेशित मानवीय मूल्यों को भी अध्ययन करवाना चाहिए जो हर एक इंसान के मूल भावनाओं को समा लेता है। आज के इस वैज्ञानिक युग में मनुष्य को अगर सही समज प्राप्त हो तो वो प्रकृति को समज कर निरंतर सुख को प्राप्त करने का प्रयास करता है और अगर सही

समज न दी जाये तो वो आत्म-केन्द्रित बन जाता है | इसलिए शैक्षणिक एवं सामाजिक धोरण पर दर्शन का अवश्य अभ्यास होना चाहिए |

स्वीकृतियाँ

इस इन्टरशिप में, मैं एक विद्यार्थिनी के रूप में भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) का आभार व्यक्त करती हूँ जिसके द्वारा मुझे इन 18 विषयों में से एक जो दर्शन शास्त्र है उसके गहन अध्ययन करने का मौका मिला एवं उसके द्वारा वर्तमान स्थिति और समस्याओं का निवारण दर्शन के माध्यम से कैसे लाया जाए वो जानने का मौका मिला | और अपनी उनिवर्सिटी का भी आभार मानना चाहती हूँ जो इसके द्वारा मुझे भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) के साथ जुड़ने का मौका मिला और अपने मेंटर को भी धन्यवाद व्यक्त करना चाहती हूँ जो जिनके अंतर्गत मैंने इन दोनों दर्शनों का अभ्यास किया एवं वर्तमान समय में इन दोनों दर्शनों की परिभाषा का भी पता चला |

इन दोनों दर्शनों के अध्ययन के दौरान व्यक्तिगत रूप से मुझे जैन और मध्यस्थ दर्शन का ज्ञान हुआ और वर्तमान समय की पीड़ाओं को दर्शन की मदद से हल करने सुझाव भी मिला | जैन और मध्यस्थ दर्शन में बताए गए मार्ग का अगर अनुसरण किया जाए तो जीवन कैसे सरल एवं उच्च बनाता है वो भी मुझे इस इन्टरशिप के दौरान पता चला |

संदर्भ

1. सर्वदर्शन संग्रह – चौखम्बा विद्याभवन
2. Google Scholar
3. Free Digital Library by Government of India
4. Madhyasth – Darshan.Info
5. महामानव महावीर : लेखक - गुणवंत शाह
6. Jainelibrary.org

परिशिष्ट

शैक्षणिक धोरण पर -इन दोनों दर्शनों के अध्ययन से भारतीय दर्शन प्रणाली के प्रति जागृतता बढ़ाई जा सकती है |सामाजिक धोरण पर – जीवन के लक्ष्य को पहचाना जा सकता है , मात्र दर्शन के अध्ययन से एवं निरंतर सुख पूर्वक जीने के स्वरूप को पहचान सकते हैं , अस्तित्व के प्रयोजन को समजा जा सकता है और दर्शन को तर्कपूर्ण विधि से लोकव्यपिकरण किया जा सकता है |